

# पर्यावरण एक चिंतनीय समस्या की – सीक्षात्मक विवेचन

## चित्रा मीणा

सहायक आचार्य भूगोल  
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय राजगढ़ (अलवर) राज.

### शोध सारांश:

प्रस्तुत शोधपत्र में पर्यावरण से संबंधित समस्याओं को समेकित किया गया है और उन समस्याओं के उत्पन्न होने वाले कारणों और पढ़ने वाले प्रभावों की समीक्षा की गई है। प्रकृति द्वारा प्रदान की गई अमूल्य धरोहर को मानव विकास के माध्यम से नष्ट करता जा रहा है। जिसका प्रभाव वर्तमान में तो हो ही रहा है परन्तु भविष्य में खतरा बनकर मानव, जीवों, वनस्पतियों व अन्य को किस प्रकार प्रभावित करेगा, जिसका अनुमान लगाना मुश्किल है। आज प्राकृतिक प्रकोप, बीमारियाँ, व अन्य विनाशकारी प्रभाव जो देखने को प्राप्त हो रहे हैं उसका सम्बंध प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से पर्यावरण से है। पर्यावरण समस्या रोकने व सुधार करने हेतु अन्तर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय स्तर पर कानून, समाजसेवियों, आन्दोलनो व प्रचार-प्रसार, संगोष्ठियों व अन्य माध्यमों द्वारा प्रयास किये जा रहे हैं। उसके बावजूद भी पर्यावरण एक चिंतनीय विषय है।

**शब्द कुंजी:** टिकाऊ विकास, अन्तर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय कानून गैसे, रसायन, वनों का दोहन, आन्दोलन

प्रस्तावना – पर्यावरण शब्द फ्रेंच भाषा के *Environeer* शब्द से बना है जिसका अभिप्राय समस्त परिवृत्ति से होता है इसके अन्तर्गत सभी स्थितियों, परिस्थितियों, दशाएँ तथा प्रभाव है जो जैविकीय समूह पर प्रभाव डाल रहे हैं पर्यावरण मानव के जीवन और उसकी क्रियाओं पर प्रभाव डालता है जो निरन्तर प्रभावित हो रही है। वर्तमान में पर्यावरण क्षय की अन्तर्राष्ट्रीय समस्या है जिसमें बढ़ती हुई जनसंख्या, नगरीकरण, जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण, रेडियोएक्टिवता, रासायनिक प्रभाव, वनों की कटाई, औद्योगिकरण, शिक्षा का अभाव, मानव की बढ़ती आकांक्षाओं के साथ विज्ञान और तकनीक आदि उत्तरदायी हैं। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पर्यावरण को ध्यान में रखकर चिन्ता जताई जाती है। सामाजिक रूप में टिकाऊ विकास की अवधारण को बल दिया गया है जिसके अन्तर्गत प्राकृतिक संसाधनों को वर्तमान पीढ़ी द्वारा इस प्रकार से उपयोग किया जाए, कि प्राकृतिक संसाधनों का न्यूनतम क्षरण हो। यदि ऐसा नहीं किया जायेगा, तो भावी पीढ़ियाँ प्राकृतिक संसाधनों से वंचित हो जायेगी। हालांकि विकास अल्पकालिक आर्थिक लाभों के बजाय दीर्घकालिक निर्वहनीय संवृद्धि के लिये इस तरह से होना चाहिए कि भावी पीढ़ियों के लिये जीवन की गुणवत्ता बनी रहे, परन्तु हमने आर्थिक विकास की जिन नीतियों को अपना रखा है और प्राकृतिक संसाधनों का अतिशय दोहन कर रहे हैं उससे आगे आने वाली पीढ़ियों का भविष्य अंधकारमय हो सकता है।

पर्यावरण असन्तुलन के लिये किसी एक निश्चित तंत्र को प्रभावी नहीं माना जा सकता है। इसमें भौतिक एवं जैविक परिस्थितियों का योग है जिसमें मुख्यघटक के रूप में स्थलमंडल, जलमंडल और वायुमण्डल निरन्तर दुष्प्रभावित हो रहे हैं, क्योंकि विकास और प्रौद्योगिकी का युग है और मानवीय गतिविधियों और क्रिया-कलापों से पर्यावरण को क्षति पहुँचती है। जिससे वैश्विक स्तर पर पर्यावरण संरक्षण को एक चुनौती के रूप में स्वीकार किया जा रहा है। पर्यावरण के महत्व को लेकर पर्यावरण विद्वानों ने विभिन्न प्रकार से समझाने का प्रयत्न किया है। टांसले के अनुसार 'प्रभावशाली दशाओं का वह सम्पूर्ण योग, जिसमें जीव रहते हैं पर्यावरण है।' डेविस के अनुसार— 'मनुष्य के सम्बंध में पर्यावरण से अर्थ मूलभूत पर मनुष्यों के चारों ओर फैले उन सभी भौतिक रूपों से है, जिनसे वह निरन्तर प्रभावित होता रहता है।' हर्सकाविट्स के अनुसार 'पर्यावरण समस्त परिस्थितियों और उसका जीवधारियों पर पड़ने वाला प्रभाव है जो जैव जगत के विकास चक्र का नियामक है।' ई. जे. रॉस का कहना है कि 'पर्यावरण वह बाहरी शक्ति है जो हमें प्रभावित करती है। जबकि पी. जिसबर्ट का मानना है कि 'पर्यावरण किसी वस्तु को निकट से घेरे हुए है और उस पर सीधा प्रभाव डालता है।' पर्यावरण को असन्तुलित करने अथवा क्षति पहुँचाने में सर्वाधिक योगदान वायु प्रदूषण का है वायु प्रदूषकों में प्राथमिक कारक के रूप में स्रोतों से निकलकर सीधे पर्यावरण को क्षति पहुँचाते हैं। जबकि द्वितीय कारक के अन्तर्गत दो या अधिक प्रारंभिक प्रदूषकों की पारस्परिक क्रिया से प्रकाश रासायनिक अभिक्रिया के परिणाम होते ( अम्ल वर्षा SO<sub>2</sub> O<sub>3</sub> ) हैं। वायुमण्डल में उन गैसों की मात्रा तेजी से बढ़ रही है जो उष्मा शोषी हैं मुख्य रूप से कार्बनडाइऑक्साइड (CO<sub>2</sub>), मीथेन (CH<sub>4</sub>), नाइट्रस ऑक्साइड (N<sub>2</sub>O), क्लोरोफ्लोरोकार्बन (CFC), परफ्लोरोकार्बन (PFC), हाइड्रोफ्लोरोकार्बन (HFC), सल्फर हेल्सा फ्लोराइड (SF<sub>2</sub>), आदि का वायुमण्डल में अधिक उष्माशोषी होता जा रहा है इन गैसों का पृथ्वी पर बढ़ते प्रभाव के कारण वायुमण्डल हरित ग्रह का रूप धारण करता जा रहा है। वर्तमान में (CO) की सान्द्रता 340 PPM है जा निरन्तर

बढ़ रही है वर्ष 2030 तक इसकी मात्रा 640 PPM व तक पहुंचने की संभावना है जिससे पृथ्वी के औसत तापमान में 4.5<sup>c</sup> तक वृद्धि हो सकती है जिससे वैश्विक तापमान में वृद्धि के साथ पहाड़ों, ग्लेशियरों, अंटार्कटिका व ध्रुवों की बर्फ पिघलेगी और समुद्री जल स्तर में वृद्धि होगी। वायु प्रदूषकों में कार्बन मोनोऑक्साइड (CO) 50 प्रतिशत प्रतिनिधित्व करने वाली गैस है जो श्वसन के माध्यम से हीमोग्लोबिन में ऑक्सीजन वहनीयता समाप्त करती है। क्लोरोफ्लोरोकार्बन ओजोन क्षरण के साथ-साथ कैंसर, मोतियाबिन्दु जैसी बीमारियाँ उत्पन्न करती हैं। कैडमियम मानव में रक्त चाप बीमारी उत्पन्न करती हैं मुम्बई स्थिति उपभोक्ता गाइडेन्स सोसायटी ऑफ इण्डिया की रिपोर्ट के अनुसार सिंदूर और कुमकुम में पारे का सल्फाइड होता है जो गुर्दे, भ्रम, पागलपन, दृष्टि संबंधी रोग उत्पन्न करता है। वायु प्रदूषकों से वनस्पतियों में चिकनाहट कम होना, पीली पड़ना और पौधों का सूखजाना इत्यादि रोग उत्पन्न होते हैं। अम्लवर्षा में सल्फर डाइऑक्साइड (SO<sub>2</sub>) और नाइट्रोजन डाइऑक्साइड (NO<sub>2</sub>) प्रमुख हैं जो रिफायनरीज, खनिज तेलों और कोयला जलने से निकलती है और फसलों, और जीव-जन्तुओं को दुष्प्रभावित करती है पर्यावरण को वायुप्रदूषण द्वारा दुष्प्रभावित करने में मोटर गाड़ियाँ और उद्योगों की प्रमुख भूमिका है।

पर्यावरण को क्षति पहुंचाने में जल प्रदूषण की भूमिका भी कम नहीं औद्योगिक इकाइयों से निकलने वाले कचरे व अपशिष्ट के रूप में क्लोराइड, सल्फरडाइ, नाइट्राइट्स, नाइट्रेट्स, अमोनिकल, नाइट्रोजन, सीसा, पारा, जस्ता, तांबा इत्यादि प्रमुख हैं। पारे के प्रभाव से मिनीमाता रोग उत्पन्न हो जाता है एवं समुद्री जीव नष्ट हो जाते हैं। सूती, ऊनी, चमड़े, शराब, कागज निर्माण उद्योगों से पर्यावरण को निरन्तर क्षति पहुँच रही है जिसका प्रभाव प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से पड़ रहा है। वर्तमान में कई टैंकरों तेल का रिसाव आयात-निर्यात के दौरान समुद्रों में हो रहा है एवं जहाजों का दुर्घटना ग्रस्त होने से प्रत्यक्ष रूप से जल प्रदूषित करते हैं जिससे हजारों समुद्री जीव-जन्तु नष्ट हो जाते हैं। 1978 में अमरीकी सुपर टैंकर नष्ट होने से 2000 वर्ग किमी. में कच्चे तेल का फैलाव हो गया। जिससे श्रिम्प तथा आयस्टर मछलियां नष्ट हो गईं। मानव की बढ़ती आवश्यकता के साथ घरेलू अपमार्जिक, सीवेज व्यवस्था, कचरा निस्तारण व्यवस्था का प्रबंध न होने के कारण रासायनिक क्रियाओं द्वारा पर्यावरण को क्षति पहुँचती है। वर्तमान समय में खाद्य पदार्थों की बढ़ती आवश्यकता के साथ-साथ फसलों तथा बागवानी जैसे कार्यों में विषैले रसायनों जैसे बी.एच.सी. (बैक्टीन हैक्सा क्लोराइड), डी. डी. टी., अमोनिया, यूरिया 2,4-D (2-4, डाइ - क्लोरोफेनावसी एसिटिक एसिड) 2,4,5-T (2,4,5- डाइक्लोरोफिनोक्सी एसिटिक एसिड) आदि का उपयोग किया जा रहा है। जिनका दुहरा हानिकारक प्रभाव पड़ता है प्रथम तो वर्षा के समय जल प्रदूषण द्वारा पर्यावरण को क्षति पहुँचती है। द्वितीय रसायन प्रभावित खाद्य पदार्थों के सेवन करने से अनेक प्रकार की बीमारियों से ग्रस्त होना।

पर्यावरण क्षरण में कोई एक कारक उत्तरदायी नहीं है, बल्कि बढ़ती जनसंख्या और उनकी बढ़ती आवश्यकताएँ पर्यावरण को पूरी तरह नष्ट करने में लगी हुई है। अमेरिका, रूस, जापान, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड, नार्वे, स्वीडन ऐसे देश हैं जिन्होंने विश्व की जनसंख्या अनुपात में अपने देश की जनसंख्या प्रतिशत में वृद्धि नहीं होने दी है। परन्तु अफ्रीका, यूरोप और एशिया के देशों में भारत, पाकिस्तान चीन सहित अन्य देशों में निरन्तर जनसंख्या वृद्धि का प्रतिशत बढ़ा है। प्राकृतिक सौन्दर्यता व सुरक्षा का आज दोहन किया जा रहा है कृषि, नगरीकरण, औद्योगिकरण झूमिंग खेती के लिये वनों की अंधाधुंध कटाई की जा रही है जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव पर्यावरण पर पड़ रहा है जिससे सूखा, बाढ़, भू-स्खलन इत्यादि प्रत्यक्ष रूप में दिखाई देते हैं 11 मार्च 2011 को पश्चिमी प्रशान्त महासागर में दैत्याकार सुनामी से जापान फुकुशिमा-डयेची परमाणु रियक्टरों में विस्फोट होने से 10,000 से अधिक लोगों की मृत्यु हो गई, 40,000 व्यक्ति रेडिएशन विशाकन हो गये, हजारों की संख्या में मछलियाँ मारी गईं साथ ही जीव-जन्तु नष्ट हो गये। पर्यावरण असन्तुलन के कारण 16-18 जून 2013 को भारत के उत्तराखण्ड में विनाशकारी भू-स्खलन हुआ है। जिसमें 6,000 से अधिक पर्यटक और श्रद्धालुओं की मृत्यु हो गई सैकड़ों लाशों का मंजर देखा गया। इस आपदा के लिए पर्यावरणविदों ने पिछले कई वर्षों से हो रहे वनों की कटाई अथवा दोहन को उत्तरदायी माना था। 'वैश्विक पर्यावरण पर दुष्प्रभाव डालने में परमाणु विस्फोटों अथवा परीक्षणों का भी योगदान विभिन्न देशों के परमाणु परीक्षणों से तापमान वृद्धि, वनस्पतियों का विनाश और मानव बीमारियाँ उत्पन्न होती अमेरिका के राबर्ट ओपेनहाइमर ने तो परमाणु हथियार को शैतान का हथियार की संज्ञा दी है। ग्लोबल वार्मिंग वर्तमान में एक बड़ी समस्या है जिससे ग्लेशियर पिघल रहे हैं जिसे वैज्ञानिकों ने मालदीप और बांग्लादेश के लिए सबसे बड़ा बताया है। मालदीप के राष्ट्रपति मोहम्मद नाशीद ने कहा कि 'हम डूब रहे हैं।'

पर्यावरण को सुरक्षित और संरक्षित करने के लिए आन्तर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर अनेक प्रयास किये जा रहे हैं। मानव पर्यावरण सम्मेलन 1974 (सी.एच.ई.) पर्यावरण पर केन्द्रित यह सबसे पहला अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन था जो 1972 में स्वीडन के स्टोकहोम में यू. एन. के तत्वाधान में आयोजित किया गया था इस सम्मेलन में 119 देशों ने भाग लिया जिन्होंने पहली बार 'एक ही पृथ्वी' के सिद्धान्त को स्वीकार किया था पर्यावरण सुरक्षा पर स्टोकहोम घोषणा पत्र को 'विश्व पर्यावरण का मैग्नाकार्टा' कहा जाता है इस सम्मेलन में वर्तमान और भविष्य में पर्यावरण सुधारने व स्वच्छ रखने का संकल्प किया गया। प्राकृतिक परिस्थितिकी तंत्र को वर्तमान और भावी पीढ़ियों के लिए संरक्षण पर जोर दिया गया। हेलसिंकी सम्मेलन 1974 समुद्री पर्यावरण की रक्षा पर प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय समझौता था जिसमें प्रदूषण के सभी स्रोतों पर विचार करने की बात की

गयी। तेल व अन्य जलीय प्रदूषणकारी पदार्थों को नियंत्रित करने व आपसी सहयोग पर बल दिया गया। मांट्रियल प्रोटोकॉल 1987 में 47 देशों ने भाग लिया। मांट्रियल प्रोटोकॉल विश्व में ओजोन क्षरण की समस्या के समाधान की दिशा में प्रथम प्रयास था जिसमें 33 देशों ने हस्ताक्षर किये सी. एफ.सी. के उत्सर्जन पर नियंत्रित करने का संकल्प लिया गया। पृथ्वी सम्मेलन 1997 – ब्राजील के रियोडि जेनेरियो में सम्पन्न हुआ। इस सम्मेलन का आयोजन संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण एवं विकास सम्मेलन (UNCED) द्वारा किया गया। रियो शहर में आयोजित होने के कारण इसे 'रियो सम्मेलन' भी कहा जाता है इसमें वैश्विक तापमान वृद्धि, प्रदूषण समस्या, जैव विविधता, आदि को मुख्य मुद्दा बनाया गया। कहा गया कि हमारे देश की राजनैतिक सीमाएँ भले ही अलग हों, परन्तु पृथ्वी के बचाने के लिए सभी देशों द्वारा एकीकृत प्रयास करना चाहिए। एक पृथ्वी है। जापान के क्योटो प्रोटोकॉल 1997 में कार्बनडाइ ऑक्साइड, मिथेन, नाइट्रस ऑक्साइड, हाइड्रोक्लोरो कार्बन, परक्लोरो कार्बन तथा सल्फर सहित 6 गैसों की कटौती पर अमेरिका सहित 159 देशों ने हस्ताक्षर किये। दक्षिण अफ्रिका के जोहांसवर्ग सम्मेलन 2002 में 104 देशों के शसनाध्यक्षों के अतिरिक्त 9, 101 सरकारी प्रतिनिधियों एवं 8,227 गैर सरकारी प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इसमें एजेंडा – 21 पर विचार-विमर्श किय गया जिसमें टिकाऊ विकास मुख्य विषय रहा। इसके पश्चात् पर्यावरण की चिंता को लेकर मांट्रियल सम्मेलन 2005, बाली सम्मेलन 2007, डेनमार्क में कोपेन हेगेन सम्मेलन 2009 में सम्पन्न हुए। कोपेन हेगेन सम्मेलन में विकासशील देशों पर कार्बन उत्सर्जन सम्बन्धी बाध्यता निर्धारित किए जाने का प्रयास विकसित राष्ट्रों द्वारा किया गया। इसमें तापमान को दो डिग्री तक सीमित करने का लक्ष्य रखा गया। अमेरिका व बेसिक (ब्राजील, साउथ अफ्रीका, इण्डिया, चाइना) के बीच अन्तिम बातचीत हुई। समझौते को सर्वसम्मत नहीं कहा जा सकता है।' इसके बाद कानकून सम्मेलन 2010, डरबन जलवायु परिवर्तन सम्मेलन 2011 तथा रियो + 20 सम्मेलन 2012 में सम्पन्न हुए।

राष्ट्रीय स्तर पर भारत में पर्यावरण संरक्षण हेतु अनेक कानून बनाये गये तथा समय-समय पर आन्दोलन चलाये गये, जिससे पर्यावरण संरक्षण हेतु जन चेतना का प्रचार-प्रसार और विकास हुआ। भारत में राष्ट्रीय स्तर पर जल प्रदूषण एवं नियंत्रण एक्ट 1974, वायु प्रदूषण निवारण एवं नियंत्रण एक्ट 1981, पर्यावरण संरक्षण एक्ट 1986, दोक दायित्व बीमा एक्ट 1991 राष्ट्रीय पर्यावरण ट्रिब्यूनल एक्ट 1992, तथा राष्ट्रीय पर्यावरण अपीलैट ऑथोरिटी एक्ट 1997 प्रभावशील है। इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय पर्यावरणीय चेतना अभियान (NEAC), पर्यावरण वाहनी, आदि कार्यरत है पर्यावरण की सुरक्षा और सुधार हेतु पृथ्वी दिवस (22 अप्रैल), विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून, औजोन दिवस 16 सितम्बर, विश्व जल दिवस 22 मार्च को प्रत्येक वर्ष विद्यालय एवं महाविद्यालयों में आयोजित किये जाते हैं जिसके माध्यम से पर्यावरण को हानि पहुँचाने वाले कारकों से जनसाधारण को अवगत कराया जाता है। "भारत में राष्ट्रीय स्तर पर पर्यावरण की सुरक्षा हेतु आन्दोलनों ने भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है जैसे 1972 में उत्तराखण्ड में चिपको आन्दोलन जिसमें सुन्दरलाल बहुगुणा, सला बेन, मीरा बेन का महत्वपूर्ण योगदान रहा। इसी प्रकार से 1983 में कर्नाटक में अप्पिको आंदोलन चलाया गया जिसमें युवक मंडली ने भूमिका निर्वाह की। 1980 बिहार में जंगल बचाओ आन्दोलन, 1987 में नर्मदा बचाओ आन्दोलन। इन आन्दोलनों द्वारा वृक्षों की कटाई को रोका गया था।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि कानूनी तौर पर अन्तर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय स्तर पर पर्यावरण को सुरक्षित करने एवं हरियाली बढ़ाने हेतु प्रयास किये जा रहे हैं, परन्तु वर्तमान में शिक्षा के प्रचार-प्रसार द्वारा वैश्विक स्तर पर प्रत्येक व्यक्ति को जागरूक होना होगा और पर्यावरण के महत्व को समझते वृक्षारोपण, प्रदूषण नियंत्रण, प्राकृतिक संसाधनों के हनन को रोकने के साथ साथ अन्य अशिक्षित व्यक्तियों को भी पर्यावरण के प्रति जागरूक करना होगा।

कूड़ा करकट, गन्दा पानी।

रोगों की करते अगवानी ।।

अगर चाहिए लम्बी आयु ।

सेवन करें स्वच्छ जल वायु ।।

मत लो तुम वृक्षों की जान ।

धरती होगी रेगिस्तान।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची:-

1. परीक्षा मंथन, पर्यावरण विशेषांक, 2013-14, भाग 6 – 7,
2. डॉ. एम. सी. सिंहल, भारत की विदेश नीति,
3. डॉ. एम. सी. सिंहल, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बंध,
4. डॉ. सविन्द्र सिंह, आपदा प्रबंधन,
5. डॉ. बी. एल. फडिया, अन्तर्राष्ट्रीय संबंध,
6. डॉ. एम. के. गोयल, पर्यावरण शिक्षा,